दैनिक जागरण
पृष्ठ-14, 20-3-16

पूरब से बजेगा कृषि क्रांति का बिगुल

पूसा में आयोजित तीन दिवसीय कृषि उन्नति मेला का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया शुभारंभ

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : खेती में अगली क्रांति का बिगुल पूरब के राज्यों से बजेगा, जहां कृषि क्षेत्र को ऊंचाइयों पर ले जाने की पूरी क्षमता है। खेती की यह क्रांति सिर्फ पानी ही नहीं, बल्कि आधुनिक तकनीक और विज्ञान की नई खोज के बल पर आएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि खेती को आधुनिक बनाने की चुनौती है। नई तकनीक को खेतों व किसानों के घर तक पहुंचाने की जरूरत है। मोदी शनिवार को यहां तीन दिवसीय कृषि उन्नति मेले का उद्घाटन करने के बाद देशभर से आए किसानों को संबोधित कर रहे थे।

राजधानी दिल्ली के भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आइएआरआइ) के मेला मैदान में कृषि व संबद्ध क्षेत्रों की आधुनिक तकनीकों का प्रदर्शन किया गया है। मोदी ने किसानों से कहा कि सबको मिलजुलकर काम करना होगा। देश की खेती में पहली क्रांति सिंचाई सुविधा वाले में आई। लेकिन दूसरी क्रांति तकनीकी और विज्ञान के आधार पर होगी। पहली क्रांति उन्हीं पश्चिमी राज्यों में हुई। अब दूसरी क्रांति की संभावना पूर्वी क्षेत्र के राज्यों पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, असम, पूर्वोत्तर के राज्यों और ओडिशा में है। यहां की मिट्टी में अपार संभावनाओं के बावजूद इन राज्यों में पुराने ढर्रे पर खेती हो रही है। इसे आधुनिक तकनीक से क्रांति में तब्दील कर देना है। मोदी ने कहा कि गांव देश की आर्थिक ताकत है। इसे गतिशील बनाने की जरूरत है। सरकार का आम बजट पहली बार गांव, गरीब और किसानों को समर्पित है। आजादी की 75वीं वर्षगांठ तक किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य है। उनके इस एलान पर किसानों ने तालियां बजाकर खुशी का इजहार किया। प्रधानमंत्री ने कृषि क्षेत्र के लिए सरकार की ओर से किए गए प्रावधानों का विस्तार से जिक्र करते हुए खेती के फायदे गिनाए। स्वायल हेल्थ कार्ड, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और फूड प्रोसेसिंग को प्रोत्साहित करने वाली योजनाओं के बारे में बताया। उन्होंने खेती में यूरिया पर दी जाने वाली सब्सिडी के दुरुपयोग को रोकने के उपाय भी बताए। नीम कोटेड यूरिया होने से इसका औद्योगिक उपयोग संभव नहीं होगा। किसानों ने मोदी की इस बात पर जमकर तालियां बजाईं।

- आधुनिक तकनीक व सिंचाई से खेती को मिलेगा मुकाम
- खेती को नई ऊंचाइयों तक ले जाने की पूर्वी राज्यों में अपार क्षमता
- गांव का विकास देश को बनाएगा आर्थिक रूप से मजबूत

◀ नई दिल्ली में कृषि उन्नति मेले में तमिलनाडु की एक महिला किसान को कृषि कर्मण पुरस्कार प्रदान करने के बाद उनसे आशीर्वाद लेते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। प्रेट

खेती में सिंचाई की अहमियत

मोदी ने कहा कि पानी के संचयन के साथ सिंचन की प्रौद्योगिकी को भी अपनाना होगा। किसानों को पानी मिल जाए तो जमीन में सोना उगा दें। केंद्र सरकार ने सिंचाई 90 परियोजनाओं को चालू करने के लिए 20,000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। प्रधानमंत्री का स्वागत करते हुए कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह ने कहा कि आजादी के बाद पहली बार किसानों की सुध लेने वाला देश का मुखिया बना है।

9 करोड़ का झोटा 1 करोड़ की भैंस

गौतम कुमार मिश्रा, पश्चिमी दिल्ली : पूसा में कृषि उन्नति मेला का उद्घाटन करने पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नजर जब युवराज (झोटा) पर पड़ी तो वे भी कुछ देर के लिए आश्चर्य में पड़ गए। उन्हें बताया गया कि इसकी कीमत करोड़ों में कई अवसरों पर लगाई जा चुकी है। युवराज देश भर से आए किसानों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा।

आठ साल का युवराज मुर्रा नस्ल का झोटा है। इसे हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिला स्थित सुनारिया गांव से प्रदर्शनी के लिए लाया गया है। इसके मालिक कर्मवीर बताते हैं कि करनाल में आयोजित पशु मेले में इसकी कीमत नौ करोड़ रुपये तक लगी थी। इसके खानपान में प्रति महीने करीब एक लाख रुपये खर्च होता है, लेकिन युवराज से होने वाली आमदनी करीब साढ़े तीन लाख रुपये महीने है। यह रोजाना 20 लीटर दूध, 10 किलो फल, 10 किलो दाना, छह किलो मटर खाता है। इसके अलावा हरा चारा, तोड़ी भी दिया जाता है। तीन कर्मचारी इसकी देखभाल करते हैं। रोजाना शाम को इसे 6 किलोमीटर सैर कराया जाता है। युवराज के बाड़े के बगल में मेडल पहने लाखो रानी (भैंस) नजर आती है। लाखो रोजाना 24 लीटर दूध देती है। इसकी कीमत एक करोड़ तक लगाई जा चुकी है।

कृषि मंत्री ने खारिज की ऐसोचैम की रिपोर्ट

नई दिल्ली, प्रेट : केंद्रीय कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह ने हाल में आंधी-तूफान और ओलावृष्टि से गेहूं की फसल को नुकसान के संबंध में एसोचैम के अनुमान को गलत बताया है और कहा है कि यह अनुमान सरकार पर आयात शुल्क घटाने के लिए दबाव डालने के मकसद से जारी की गई है।

कृषि मंत्री ने कड़े शब्दों में बयान जारी करके एसोचैम की रिपोर्ट को खारिज कर दिया। एसोचैम ने बेमौसमी बारिश व ओलावृष्टि से 1.30 करोड़ टन गेहूं की फसल नष्ट होने का अनुमान जारी किया था। उन्होंने कहा कि कुछ हिस्सों में बारिश से गेहूं की फसल खराब हुई है। इसके बावजूद उत्पादन पिछले साल के मुकाबले सात फीसद बढ़कर 920-930 लाख टन रहने का अनुमान है। पिछले साल गेहूं का उत्पादन 865.3 लाख टन रहा था। कृषि मंत्री ने कहा कि एसोचैम की रिपोर्ट तथ्यात्मक रूप से गलत है और गेहूं पर आयात शुल्क घटाने के लिए सरकार को बाध्य करने के मकसद से ऐसी रिपोर्ट जारी की गई है। इस समय गेहूं पर 25 फीसद आयात शुल्क देय है। कृषि मंत्रालय ने दूसरे अग्रिम अनुमान जारी करके मौजूदा वर्ष 2015-16 में 938.2 लाख टन गेहूं उत्पादन होने की संभावना जताई है। मध्य प्रदेश, गुजरात और राजस्थान में गेहूं की कटाई भी शुरू हो चुकी है।

- आयात शुल्क घटाने को दबाव बनाने के लिए गलत अनुमान जारी किया : राधामोहन सिंह

प्रभारी, समाचार पत्र मॉनिटर